अध्याय–द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 सम्बंधित शोध साहित्य के अवलोकन का महत्व

2.3 सम्बन्धित शोध कार्य

अध्याय विदतीय

सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

शैक्षिक शोध के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य करते समय शोध विषय या समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। सम्बधित शोध साहित्य में निर्धारित शोध समस्या क्षेत्र से सम्बधित किताबे, ज्ञानकोष, पत्र–पत्रिकाएँ, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबंध, अभिलेख आदि को सम्मिलित किया जाता है। इस सम्बन्धित शोध साहित्य के अध्ययन से शोधकर्ता को अपने शोध समस्या का निर्धारण, चरों का निर्धारण, शोध के उद्देश्य, शोध की परिकल्पनाएँ निर्धारित करने में महत्वपूर्ण सहायता होती है। तथा किसी समस्या से सम्बन्धित उद्देश्य एवं परिकल्पना की पुनरावृत्ति न होने में सहायता प्राप्त होती है, यदि कोई शोधकर्ता अपने शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन किए बिना शोध कार्य करता है। तो यह शोध कार्य अंधेरे में तीर चलाने के बराबर होगा जिससे की, शोध कार्य उचित दिशा में आगे नहीं बढायां जा सकता, तथा ना ही इस दिशा में अपेक्षित सफलता प्राप्त हो सकती है। अतः आवश्यक है कि शोध कार्य में उचित सफलता संबधित शोध साहित्य के पुनरावलोकन एवं शोधकर्ता का अनुभव एवं जिज्ञासा पर निर्भर करता है।

2.2 सम्बन्धित शोध साहित्य के अवलोकन का महत्व

1. शोध समस्या का निर्धारण, समस्या विधान की रचना, तथा शोध कार्य से सम्बंधित समंक संकलन हेतु उपकरण का निर्माण करने में सम्बन्धित शोध साहित्य का अवलोकन महत्वपूर्ण है।

2. अपने शोध समस्या से सम्बधित जानकारी प्राप्त करने, अनुभव प्राप्त करने एवं शोध कार्य को आगे बढाने में शोध साहित्य का अवलोकन आवश्यक है।

3. अपनी शोध समस्या से सम्बंधित नवीन समस्याओं का पता लगाया जा सकता है।

4. निर्धारित शोध समस्या की वास्तविक प्रवृत्ति को समझने के लिये सम्बंधित शोध साहित्य का अवलोकन आवश्यक है।

5. शोध कार्य हेतु प्रतिदर्श का निर्धारण, चरों का निर्धारण, सांख्यिकीय प्रविधियॉ तथा शोध कार्य को महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्न सम्बंन्धित शोध साहित्य का पूनरावलोकन किया गया है।

2.3 संबंधित शोध कार्य

2.3.1 परवीन निशांतः ''मुस्लिम बालक एवं बालिकाओं में शैक्षणिक पिछडापन एक अनुभवात्मक अध्ययन'' (2003) प्रायमरी शिक्षक, एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली।

शोध के उद्देश्य :–

1. मुस्लिम बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा में भागीदारी का अध्ययन करना।

2. मुस्लिम बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।

3. मुस्लिम बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा पर उनके अभिभावकों की आर्थिक सामाजिक, शैक्षिक, व्यवसायिक स्थिति, एवं परिवार में सदस्यों की संख्या के प्रभाव का अध्ययन करना।

4. मुस्लिम बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा के प्रति उनके अभिभावको के विचारों एवं धारणाओं का आकलन करना तथा बाधक तत्वों की पहचान करके उनके निवारण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध के निष्कर्ष

1. मुस्लिम बालक एवं बालिकओं की शिक्षा में भागीदारी की प्रवृत्ति में लैगिक आधार पर भिन्नता दिखाई देती है।

2. उच्चं आय वाले मुस्लिम परिवार में निम्न एवं मध्यम आय वाले परिवार की अपेक्षा लड़के एवं लड़कियों की स्कूल जाने की प्रवृत्ति अधिक है।

3. उच्च सामाजिक स्थिति वाले परीवार में निम्न सामाजिक स्थिति वाले परिवार की अपेक्षा लड़के एवं लड़कियों की स्कूल जाने की प्रवृत्ति अधिक है।

4. निरक्षर अभिभावकों की अपेक्षा साक्षर अभिभावको मे लड़के एवं लड़कियों को स्कूल भेजने की प्रवृत्ति अधिक है।

5. उच्च एवं निम्न व्यवसाय करने वाले अभिभावकों के लड़के एवं लड़कियों की शिक्षा विषयक प्रगति में अंतर है।

6. विभक्त परिवार में स्कूल जानेवाले बालक बालिकाओं की संख्या अधिक है, तथा स्कूल छोडनेवाले बालको की संख्या कम है। तथा संयुक्त परिवार में स्कूल जानेवाले बालक बालिकाओं की संख्या कम है, एवं स्कूल छोड़नेवाले बालक एवं बालिकओं की संख्या अधिक है।

7. मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा को पर्दा प्रथा अभिभावको की लापरवाही, बालिकाओं की असुरक्षा प्रभावित करती है।

8. लड़को की शिक्षा में महत्वपूर्ण कारक नौकरी प्राप्त करना है तथा बालिकाओं के लिए अच्छी गृहिनी बनाना है।

2.3.2 पटेल हर्षद– "बालको के प्रति अभिभावको का दैनिक व्यवहार में लिंग–आचरण का अध्ययन।" (2005), एम. एड्, आर.आई.ई. भोपाल।

उद्देश्य

1.अभिभावकों का लड़को के प्रति रूढिबद्ध व्यवहार का अध्ययन करना।

2.अभिभावकों का लड़कियों के प्रति रूढिबद्ध व्यवहार का अध्ययन करना।

3.अभिभावकों की लिंग समानता के प्रति अभिवृत्ति और उनकी समज का अध्ययन करना।

3.अभिभावकों का लड़का एवं लड़कियों के प्रति लिंग–आचरण की तुलना करना।

निष्कर्ष

1. शिक्षित अभिभावक लड़कों से रूढिबद्ध काम करवाते है एवं उनके रूढिबद्ध भूमिका का पक्ष लेकर लैगिक पक्षपात रखते है।
2. शिक्षित अभिभावकों का लड़कियों के प्रति व्यवहार रूढिबद्ध है। शैक्षिक पाठ्यक्रम के विषय में भी अभिभावकां की अभिवृत्ति लैंगिक पक्षपात की है।
3. अभिभावकों का लिंग–समानता के प्रति दृष्टिकोण पक्षपातपुर्ण है।
4. अधिकतर अभिभावक लड़कियों से रूढिबद्ध लिंग–आचरण की अपेक्षा रखते है।

2.3.3. चौधरी सुजीत कुमार – "उच्च शिक्षा में महिलाओं की स्थिति एवं व्यावसायिक भेदभाव।" (2007), शोध सारांश, परिप्रेक्ष, रा.शै.नि.एवं प्र.वि. दिल्ली।

उद्देश्य

उच्च शिक्षा में महिलाओं की स्थिति एवं व्यवसायिक भेदभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. महिलाओं में उच्च शिक्षा का विकास शहरी क्षेत्र के उच्च सामाजिक वर्ग के महिलाओं तक ही सीमित है।

2. अभिभावकों का व्यवसाय लड़कियों के विद्यालयीन नामांकन को प्रभावित करता है।

3. लड़कियों की शिक्षा में अधिकांश लड़कियॉ वरिष्ट प्रशासनिक, प्रबंधकीय अधिकारी, वरिष्ठ पेंशेवर, एवं उद्योगपति के परिवार से है।

4. भारत में पितृसत्ताक समाज होने के कारण लैगिक आधार पर व्यवसायिक भेदभाव किये जाते है।

5. महिलाओं की गतिशीलता पुरूषों की अपेक्षा सीमित है। जिसके लिये लैगिक पक्षपात एवं महिलाओं की शारीरिक क्षमता विषयक पूर्वाग्रह जिम्मेदार है।

6. निजी क्षेत्र में उच्च पदों पर आरूढ व्यक्तियों में महिलाओं का प्रमाण सिर्फ तीन प्रतिशत है।

7. प्रबंधन शिक्षा प्राप्त महिलाओं में 70 प्रतिशत महिलाओं व्दारा किसी भी प्रकार का कैरियर नहीं अपनाया जाता है।

8. महिलाओं की उच्च शिक्षा एवं व्यवसाय में भागीदारी निम्न रहने के लिए विभिन्न सामाजिक भेदभाव एवं सास्कृतिक पुर्वाग्रह उत्तरदायी है।

2.3.4 Sudhakar C. " Universalization of girl education: Community plarticipation A study of wedvers." (2007)

शोध के उद्देश्य :–

1. कपड़ा बुनने वाले समुदाय में लड़कियो का स्कूल में नामांकन एवं शाला त्यागने की प्रवृत्ति का विश्लेषण करना।

2. कपड़ा बुनने वाले समुदाय की लड़कियों की शिक्षा में सहभागिता का अध्ययन करना।

शोध के निष्कर्ष :–

1. उच्च जाति की अपेक्षा निम्न जाती की लड़कियों में शाला त्यागने की प्रवृत्ति कक्षा 4 एवं 5 में अधिक पायी गई है।

2. लड़कियों में शाला त्यागने की प्रवृत्ति को समाज की प्रथा, परंपरागत विचारधारा कारणीभूत रही है। जो कि, लड़कियों को पढ़ने के लिए समस्या निर्माण करती है।

3. लड़कियों की शिक्षा के लिए उनके पिता का कपड़ा बुनने का व्यवसाय प्रभावित करता है।

2.3.5 अवस्थि रीता, पांण्डे उमाशंकर :–''प्राथमिक शिक्षा की सार्वभौमिकता में विशेषकर बालिका शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोध'' (2008), शोध सारांश परिप्रेक्ष्य, रा.शै.नि.एवं प्र.वि. दिल्ली।

उद्देश्य

1. परिवार की आर्थिक स्थिति एवं बालिका शिक्षा में अवरोध का अध्ययन करना।

2. परिवार की सामाजिक स्थिति एवं बालिका शिक्षा में अवरोध तथा अपव्यय का अध्ययन करना।

3. परिवार के सदस्यों की शैक्षिक स्थिति एवं बालिका शिक्षा में अपव्यय तथा अवरोध का अध्ययन करना।

4. विद्यालयों में सुविधाओं का अभाव एवं लड़कियों की शिक्षा में अपव्यय तथा अवरोध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. परिवार की आर्थिक समस्याएँ बालिकाओं की पढाई के प्रति रूचि को कम कर देती है। कमजोर आर्थिक स्थिति वाले अभिभावक अपनी लड़कियों को मजदूरी के काम पर लगाते है। तथा परिवार में छोटे बालक–बालिकाओं की देखभाल बडी लड़कियों को करनी पडती है। जिसके कारण, वे लड़की को विद्यालय नहीं भेजते।

2. निम्न सामाजिक स्थिति वाले परिवार की लड़कियों की शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोध के लिए पिता द्वारा मादक द्रव्यों का सेवन किया जाना, स्थानिक विद्यालयों में शिक्षक–पालक संघ की स्थापना न होना, शिक्षकों को उनकी सामाजिक स्थिति रीति–रिवाज आदि से परिचय का अभाव आदि कारक बालिका शिक्षा में अवरोध तथा अपव्यय निर्माण करते है।

3. शिक्षित परिवार के अभिभावकों का बालिका शिक्षा पर अनुकूल प्रभाव पडता है। तथा निरक्षर परिवार के अभिभावकों का बालिका शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

4. गांवो में विद्यालय का अभाव, विद्यालय का बालिकाओं के निवास स्थान से अधिक अंतर, विद्यालयों में बालिकाओं के लिए आवश्यक सुविधाओं की कमी, शिक्षण सामग्री की निरसता, विद्यालयों की अनियमितता, तथा अमनोवैज्ञानिक शिक्षण प्रणाली आदी लड़कियों की प्राथमिक शिक्षा की सार्वभौमिकता में अपव्यय एवं अवरोध निर्माण करती है।

1.3.6. सोलंकी जयद्रसिंह :– "समाज में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन के बारे में विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन" (2008), एम.एड. आर.आई.ई. भोपाल।

उद्देश्य

1. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण को जानना।
2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण के अंतर को जानना।
3. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण के अंतर को जानना।

निष्कर्ष

1. कक्षा आठवीं के छात्रों में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है।
2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है।
3. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में लिंग भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।

1.3.7. **Chaturvedi, Srivastava N**"Assessmentg of attitude different towards girls' child in selected districts of North India" (2008), women's study and development center university of Delhi

उद्देश्य

1. लड़कियों की शिक्षा के संबंध में सामाजिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. लड़कियों की शिक्षा के संबंध में क्षेत्र निहाय दृष्टिकोण (ग्रामीण–शहरी) में अंतर का अध्ययन करना।
3. लड़कियों की शिक्षा के लिए चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रयासों का सामाजिक दृष्टिकोण पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. लड़कियों की शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. लड़कियों की शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर हैं
2. लड़कियों की शिक्षा के संबंध में क्षेत्र निहाय दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है।
3. लड़कियों की शिक्षा के लिए चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रयासों के प्रति जागरूकता है, जिसका अनुकूल प्रभाव ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के लोगों के लड़कियों की शिक्षा विषयक दृष्टिकोण पर पडता है। तथा ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में इन कार्यक्रमों का अधिक अनुकूल प्रभाव पडता है।
4. लड़कियों की शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में अनुकूल परिवर्तन हो रहे है।